रात्रिक्लास 1/5/68 :– दुनियां तो दुनियांवी बातों से बहलाते हैं। यह है ईश्वरीय बातों से बहलाना। यह है रूह–रूहान। रूह–रूहान सिर्फ़ इस समय होती है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बाप आकर रूहों से बात करते हैं। समझाते भी हैं बच्चों को कि अपन को आत्मा समझो। शिव को स्प्रीचुअल रूहानी फादर कहा जाता है। लौकिक बाप को कब ऐसे नहीं कहेंगे। रूहानी बाप है तो ज़रूर रूहानी बाप आकर रूहानी बच्चों को बहलावेंगे। समझाते रहेंगे हे रूहानी बच्चों। रूहानी बाप और क्या कहेंगे। घड़ी–2 कहेंगे रूहानी बच्चे। प्रैक्टिस हो जाती है। कल्प–2 की ड्रामा अनुसार प्रैक्टिस है। समझाते हैं मैं तुम्हारा बाप हूँ। तुम मेरे बच्चे हो। यहां आत्मा पवित्र नहीं है, हमारी तो पवित्र है। तो अपने को आत्मा समझ मुझे याद करते रहो। आत्मा और परमात्मा का मेला भी एक ही बार होता है। हर एक बात बेहद की है। तुम सतोप्रधान थे, बेहद में थे। अभी तमोप्रधान बन गये हो। बेहद में थे तो बेहद का राज–भाग था। भक्ति मार्ग में बेहद के बाप को ही याद करते हैं। भक्तों पर भीड़ तब पड़ती है जब विनाश का समय होता है। भक्त बहुत दुःखी होते हैं। अभी दुःखी होने का है। बच्चे जानते हैं न अन्न मिलेगा, न जल मिलेगा। गैस के पाइप फटने से पानी में भी ज़हर हो जाता। दुःखों का पहाड़ गिरना है। यह तो बच्चों को मालूम है पुरानी दुनियां ख़त्म होनी है। क्या–2 बनता रहता है। कहते हैं हम ऐसा बनाते हैं जो दस/ बीस दुनियां भी खलास हो जावेगी। यह तो रखने लिए नहीं है। बड़ा खर्चा होता है। तुम जानते हो पुरानी दुनियां का विनाश होना है। नई दुनिया की स्थापना लिए हम पढ़ते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम नई दुनियां के लिए पढ़ते हैं। उनको अमरलोक भी कह सकते हैं। मृत्युलोक में पढ़ते हो अमरलोक के लिए। तुम यहां नई बातें सुनते हो। बाप आकर नई दुनियां स्थापन करते हैं। यह तो बाप जाने और बच्चे। जिनके साथ रूह–रूहान करते हैं वह जाने। और कोई नहीं जानते। भल कहते भी हैं नई बात है। फिर भी कहेंगे। वेदों में यह है, इनमें यह है। वह सभी हैं जिस्मानी बातें। यह तो बाप

अधूरी मुरली